साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 49, नवम्बर(द्वितीय) , 2018

आवारा कुत्तों का रोड शो .....

सुशील यादव

मार्निग-वाक में डागी 'सीसेंन' को घुमाने का काम फिलहाल मेरे जिम्मे आ गया है।

रास्ते में दीगर कुत्तों से बचा के निकाल ले जाने का टिप, गणपत ने जरूर दिया था, मगर प्रेक्टिकल में तजुर्बा अलग होता है।

एक हाथ में डंडा,एक हाथ में पटटा पकडे, कुत्ते के बताए मार्ग को तय करो | खुद खिंचते चले जाओ। सामने आये दूसरी नस्ल की बिरादरी वालो को भगाते रहो।यह आम कुत्ता प्रेमियों का शगल है |

उस दिन शर्मा जी साथ हो लिए ,पूछे कौन सा है ?मैंने कहा अल्शेशियन।

कितने का लिए ? मैंने कहा ,एक मित्र के यहाँ बोल रखा था ,उनने दिलवाया। वे बोले; और कोई मिले तो दिलवाइए हमें भी ।

मैंने कहा ,शर्मा जी ,झंझट का काम है, कुत्ते का शौक करना। अपना बस चले तो अभी ये पट्टा आपको थमा के छुट्टी पा लें ,मगर 'पिंटू' का शौक है; सो खींचे जा रहे हैं।

वैसे भी आप मांस-मच्छी,अंडा कहाँ खिला पाओगे ,ये नस्ल तो इनके बिना गाय-माफिक हो जायेगी।

शर्मा जी, नान-वेज पर टिक नहीं पाए| वे राजनीति में उतर आये। क्या कहते हैं ?किसकी बनेगी ?

मैंने कहा, जो ज्यादा भौंक ले वही मैदान से दूसरों को खदेड़ने के काबिल होता है ,मैंने डार्विन से मिलते-जुलते विचार फेका .... वैसे आपका क्या कहना है ?

आपकी बात तो सही है। आजकल टी-वी देख-देख ,सुन-सुन के तो कान पाक गए हैं।

एक सोची -समझी साजिश के तहत 'मेंडेट' के नाम पर बिना सर्वे के डाटा दे डालते हैं | दिया खींचने के लिए धमाके करके बताएँगे कि रूलिंग पार्टी का आधार खिसक रहा है | फिर यही लोग चार पैनलिस्ट को बिठाके प्रायोजित तू-तू ,मैं-मैं करके साबित कर देते हैं कि जनता का हुजूम उन्हें जिताने के लिए बेताब बैठी है | ये ध्यान भटकाने वाले स्केंडल ,सेक्स ,और घोटाला की लंबी फेहरिस्त दे-दे के मुद्दों पर आपको टिकने नहीं देती | यहां ,विपक्ष को अधमरा करना, पहले एजेंडे में शामिल है |

हम ,क्यों नहीं,अपना भटकना बन्द करते ..... ? ..... ऐ.... सीसेंन उधर नही ....रास्ते में चलो ....।

शर्मा जी ने कहा, आपकी बात समझ लेता है !देखो रास्त में आ गया।

मैंने कहा शर्मा जी यही तो खूबी है, इन कुत्ते लोगो की।

भौंकते जबरदस्त हैं ,दौड़ाएंगे भी खूब, मगर जब तक मालिक न कहे काटेंगे नहीं।

आगे देखिये..... ,वे जो कुछ आवारा कुत्ते आ रहे हैं कैसे गुर्रायेगे इस पर..... लगेगा अकेला आये तो नोच लेगे.....।

मगर वहीँ ,जब हमारा अल्शेशियाँ एक गुर्रायेगा तो दुम दबा के भाग खड़े हो जायेंगे स्साले .....।

शर्मा जी को तत्कालिक परिणाम भी देखने को मिल गया।

चक्रव्यूह की माफिक, आवारा रोड छाप कुत्तों से, अल्शेशियन सीसेन घिर गया। वो थोडा सहमा मगर जैसे ही हमने हिम्मत दी, वो उन सब पर भरी पडने लगा।

आवारा कुत्ते आपनी रोड शो रैली को, दूसरी गली की तरफ ले गए।

मैंने कहा देखा शर्मा जी ,यही हमारे इधर भी हो रहा है। रैलियां देख के हम अंदाजा लगा लेते हैं उमीदवार में दम है।

जब तक कोई ताल ठोंक के सामने आके नहीं गुर्रायेगा, जनता बेचारी भ्रम पाले रहेगी और अपना वोट देते रहेगी।

हमारा मानना है ,आप क्वालिटी देखो नस्ल देखो ,दमखम देखो। ये नहीं कि चोर,उठाईगीर धोखेबाज ,सुपारी-किलर ,ब्लेक मार्केटियर ,दलाल-ठेकेदार कोई भी टिकट हथिया ले, और उसे आप चुन लो।

शर्मा जी , इस गड़बड़ को रोकना होगा .... ! आजकल यही सबकुछ हो रहा है।

एक ने भाषण झाडने में महारत हासिल कर ली,दूसरे ने पोल खोलने की विद्या सीख ली | वे दोनों बन गए राजनीति के दिग्गज पंडित ।

गुंडे-मवाली,घूसखोरों,देश का पैसा लूट के भागने वालों से देश को बचाओ भइ ... बहुत हो गया।

इतनी देर खड़े गपियाने में, सीसेन कब दिशा मैदान से फारिग हो गया, पता ही नहीं चला।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें